रीतिकालीन कवि बिहारी का मुक्तक काव्य

डॉ. सविता
हिन्दी विभाग
माता सुन्दरी कॉलिज, दिल्ली

सारांशिका

बिहारी ने कम शब्दों में अधिक बात कही है और अधिक तथ्यों एवं मानवीय जीवन मूल्यों को प्रदर्शित किया है। अतः देखा जाए तो वास्तव में बिहारी एक कुशल कलाकार ही नहीं अपितु जिन्होंने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा से एक के साथ–साथ अनेक भावों को गूँथ दिया है। ऐसे भाव को देखकर लगता है कि कवि अनेक भाव प्रदर्शन कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में किसी ने ठीक ही कहा है कि उनका एक–एक दोहा, नहीं, एक–एक शब्द जादू का ऐसा पिटारा है कि उसमें से अर्थ से पर्त खुलते चले जाते हैं और पिटारा है कि खाली होने में ही नहीं आता।'' यह कवि भाव की कुशलता है कवि बिहारी समास शैली में बहुत कुशल एवं प्रवीण है। इसलिए उन्होंने बहुत कम शब्दों में गहन एवं सूक्ष्म भावों को अधिक सरलता से चित्रित कर प्रदर्शित किया है।

मुख्य शब्दः काव्य, मुक्तक, दोहे, रीतिकाल, भाषा, सूक्तियां

रीतिकालीन कवियों में बिहारी का मुख्य स्थान है क्योंकि उन्होने अपने दोहा जैसे छन्द में अनेक भाव का प्रदर्शन किया है। इसीलिए रीतिकालीन कवियों में सर्वाधिक लोकप्रिय कवि बिहारी मुक्तकार कहे जाते हैं क्योंकि उन्होंने दोहा जैसे छोटे से छन्द में विविध भाव भर दिये हैं। इस ओर श्री वियोगी हरि लिखते हैं–''इनका (बिहारी का) एक–एक दोहा टकसाली और अनमोल रत्न है। ये रत्न क्षीरसागर के रत्नों से कहीं अधिक चोखे और अनोखे हैं।'' वस्तुतः बिहारी के काव्य में अनेक भाव दर्शन के कारण ही कवियों में मूर्धन्य स्थान रखते हैं। इस सम्बन्ध में पण्डित पदम सिंह शर्मा कहते हैं ''बिहारी के दोहों का अर्थ गंगा की विशाल जल धारा के समान है, जो शिव की जटाओं में समा तो गई थी, परन्तु उससे बाहर निकलते ही वह इतनी असीम और विस्तृत हो गई कि लम्बी–चौड़ी धरती में भी सीमित न रह सकी। बिहारी के दोहे रत्न के सागर हैं, कल्पना के इन्द्र धनुष हैं, भाषा के मेघ हैं। उनमें सौन्दर्य के मादक चित्र अंकित हैं। कवि का यश उसकी रचनाओं के परिणाम से नहीं होता, गुण के हिसाब से होता है।''1 बिहारी के सम्बन्ध में तभी कहा जाता है कि इन्होने गागर में सागर भर दिया है क्योंकि वह कल्पना भाव में नहीं जीते हैं बल्कि यथार्थ परिवेश की सच्चाई को उन्मुख कर संजीव कर देते हैं।

वस्तुतः मुक्तक काव्य उस रचना को कहते हैं, जिसमें प्रत्येक पद स्वतन्त्र होता है। इस प्रकार की रचना में पदों का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं होता किन्तु फिर भी प्रत्येक पद अपने आप में पूर्ण होता है। सम्पूर्ण रुप से वह अपने भाव का प्रदर्शित करता है जिससे उसका सौन्दर्य बना रहता है। कवि बिहारी ने श्रेष्ठ मुक्तकों की रचना की तथा मुक्तक रचना के लिए कवि सरस प्रसंगों और सरस पदावली का चयन करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार–''जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समास–शक्ति जितनी अधिक होगी, मुक्तक रचना में वह उतना ही सफल होगा। अतः कविता उनकी श्रृंगारी है।''2 बिहारी के काव्य में ऐसे सभी गुण विद्यमान हैं। इसके साथ ही साथ सूक्ष्ण पर्यवेक्षण शक्ति, उक्ति–वैचित्रय तथा भाव एवं कला पक्ष का सुन्दर समन्वय भी इनके काव्य में देखने को मिलता है जिससे पाठक के मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है। इसका तात्पर्य है कि बिहारी ने कम शब्दों में अधिक बात कही है और अधिक तथ्यों एवं मानवीय जीवन मूल्यों को प्रदर्शित किया है। अतः देखा जाए तो वास्तव में बिहारी एक कुशल कलाकार ही नहीं अपितु जिन्होंने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा से एक के साथ–साथ अनेक भावों को गूँथ दिया है। ऐसे भाव को देखकर लगता है कि कवि अनेक भाव प्रदर्शन कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में किसी ने ठीक ही कहा है कि उनका एक–एक दोहा, नहीं, एक–एक शब्द जादू का ऐसा पिटारा है कि उसमें से अर्थ से पर्त खुलते चले जाते हैं और पिटारा है कि खाली होने में ही नहीं आता।'' यह कवि भाव की कुशलता है। ''इनकी कविता श्रृंगार रस की है। इसीलिए नायक व नायिका की वे चेष्टाएँ जिन्हें हिन्दी वाले हाव कहते हैं।''3 बिहारी ने अनेक सरस प्रसंगों की अवतारणा की है, साथ ही सरस पदावली में अपने भावों की अभिव्यक्ति की है। यहाँ पर श्रृंगार सौन्दर्य भाव को देख सकते हैं कि नायिका किस प्रकार बालों के बीच अँगुली डालकर नन्द कुमार को देखती है और जिससे उनकी भाव भंगिमा कितनी मोहक बनी हुई है –

कंज नयनि अंजनु दिये बैठी ब्योरति बार।
कच उंगली बिच दीठि दें चितवति नन्द कुमार।।
– बिहारी सतसई

कवि ने विविध प्रसंगों के अनुसार भावों के अनुरुप भाषा का प्रयोग किया है। मानसिक स्थिति के अनुकूल कोमल, कठोर और सामान्य भाषा में ही अपने भाव को प्रकट कर रहे हैं जिससे कहीं भी भाव में विक्षेप न आने पाये और उनके सुख सौन्दर्य में कमी न आने पाए। इसलिए सुखात्मक स्थिति में नायिका उल्लास की अभिव्यक्ति सरस पदावली में की गई है। ''विरह–वर्णन में कहीं–कहीं तो स्वाभाविक उक्ति कही गई है, पर कहीं–कहीं वह खिलवाड़ सी लगती है। उन्होने विरह की व्यंजना में माध्यम मार्ग का ही अवलम्बन दिया है।''4 जब कभी दुख की स्थिति आती है तब भी कवि दुःखात्मक स्थिति को उजागर करने में कोमल, कठोर पदावली को प्रदर्शित करने में सक्षम दिखलाई देते हैं –

कागद पर लिखत न बनत कहत संदेसु लजात।

कहि है सबु तेरी हियौ मेरे हिय की बात। – बिहारी सतसई

इनके काव्य में कल्पना की समाहार शक्ति देखने को मिलती है। अतः बिहारी की कल्पना एक से एक अनूठी छन्दों में देखने को मिलती है। इनके दोहों में नखशिख वर्णन, प्रकृति–चित्रण, संयोग–वियोग और भक्ति–नीति के चित्रण में कवि की यह कल्पना शक्ति निरन्तर देखी जा सकती है। इन दोहों में नायिका के झाँकने की कवि बिहारी ने कितनी सुन्दर कल्पना की झाँकी प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसी नायिका की सौन्दर्य झाँकी रीतिकालीन के किसी कवि ने नहीं की है और न ही ऐसा श्रृंगारिक सौन्दर्य नायिका का कहीं अन्यत्र देखने को मिलता है।

सटपटाति सी ससि–मुखी पट–घूँघट मुख ढाँकि।

पावक–झर सी झमकि कै गई झरोखा झांकि।।– बिहारी सतसई

ऐसे ही सौन्दर्य दर्शन की एक अन्य झाँकी प्रस्तुत कर रहे हैं जब नायिका के नेत्रों का चित्रण करते हुए कवि अपनी अद्‌भुत कल्पना शक्ति का नवीन उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसीलिए नायिका के नेत्र रुप सौन्दर्य की मनोहारी मनोवृत्ति इतनी खूबसूरती से कवि कर रहे हैं कि चतुर शिकारी रुपी नेत्र से नायक बच नहीं पाता है। इतना ही नहीं बल्कि उन्होने समास शैली के प्रयोग में भी कवि बिहारी बहुत निपुण है। उन्होने बहुत कम शब्दों में बहुत गहन एवं सूक्ष्म भाव को बहुत ही सुन्दर ढंग से सरल शब्दों में प्रस्तुत किया है। इन काव्य पंक्ति में यह देखा जा सकता है।

खेलन सिखए अलि भले, चतुर अहेरी–मार।

कानन–चारी नैन–मृग, नागर नरनु सिकार।। – बिहारी सतसई

कवि बिहारी समास शैली में बहुत कुशल एवं प्रवीण है। इसलिए उन्होंने बहुत कम शब्दों में गहन एवं सूक्ष्म भावों को अधिक सरलता से चित्रित कर प्रदर्शित किया है। इसका दिग्दर्शन इन काव्य पंक्ति में दिखलाई पड़ रहा है –

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।

भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

– बिहारी सतसई

इसी तरह से नायिका के नेत्रों की विविधता एवं अनुपमता का सौन्दर्य चित्रण करते समय कवि बिहारी ने अनेक बार प्रस्तुत किया है जिसके विविध उदाहरण दिए जा सकते हैं –

सायक सम मायक नयन रंगे त्रिविध रंग गात।

झखौ बिलखि दुरिजात जल लखि जलजात सलाज।।

– बिहारी सतसई

बिहारी ने अपने काव्य में उक्ति–वैचित्रय का प्रशंसनीय कार्य किया है क्योंकि उन्होंने लक्षणा, व्यंजना और वक्रोक्ति अलंकार की सहायता से काव्य में चमत्कार एवं प्रभाव उत्पन्न किया है। अतः कवि बिहारी ने अभिप्रेत अर्थ की प्रतीति के लिए शब्द के लक्ष्य अर्थ पर अधिक जोर दिया है जिसके कारण वह किसी को भी भाव विभोर कर देते हैं। जैसे –

दृग उरझत टूटत कुदुम जुरति चतुर चित प्रीति।

परति गाँठ दुरजन हियै दई नई यह रीति।। – बिहारी सतसई

वास्तव में बिहारी के भाव–प्रदर्शन की कौशलता इतनी निराली है कि मनुष्य का हृदय शीघ्र ही चमत्कृत हो उठता है क्योंकि बिहारी की उक्तियों में विलक्षणता, सरसता, आकर्षण एवं प्रभाव सर्वत्र ही विद्यमान है। इसलिए कवि अपनी दुष्टता के न छोड़ने का वर्णन कितनी विलक्षण रीति एवं खूबसूरती से कर रहा है। इसका आभास वह किसी को नहीं होने दे रहे हैं –

करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीन दयाल।

दुखी होइगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल।। – बिहारी सतसई

बिहारी के काव्य में देखा जाए तो निश्चित रुप से सूक्तियाँ एवं अन्योक्तियों के कारण बड़ी संजीव सर्वत्र दिखलाई देती है। अतः इनके काव्य में अनेक सूक्तियाँ और अन्योक्तियाँ दर्शनीय है। इनमें बिहारी अपने व्यक्तिगत अनुभवों को चित्रित कर रहे है। बिहारी की अन्योक्तियाँ अपनी मार्मिक व्यंजकता में बेजोड़ हैं। इसका एक उदाहरण देखिए

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास एहि काल।

अली कली ही सो बँध्यौ आगे कौन हवाल।। – बिहारी सतसई

इतना ही नहीं बल्कि बिहारी के उपालम्भ और व्यंग्य सराहनीय हैं। जब ईश्वर भक्त के कष्ट दूर नहीं करते हैं तब वह कह उठते हैं कि हे जगत–गुरु ! हे जग–नायक ! आपको भी शायद संसार की हवा लग गई है अथवा संसार के रंग में रंग गए हैं। ऐसी परिस्थिति को देखकर तभी तो कवि बिहारी कह रहे हैं कि –

कब को टेरतु दीन रट होत न स्याम सहाय।

तुमहू लागी जगत–गुरु ! जग–नायक ! जग–बाय।।

– बिहारी सतसई

बिहारी ने विविध भावों, विभावों और अनुभावों की सुन्दर योजना काव्य की है। नायिका का भौंहे चढ़ाना, कटाक्ष करना, धीरे–धीरे मुस्कराना, सौंह (शपथ) खाना, छिपकर प्रिय को देखना और नेत्रों से बात करना आदि का चित्रण कवि बिहारी ने बड़े मनोयोग के साथ प्रस्तुत किया है जिसके कारण अनेक स्थल मनोहारी सौन्दर्य की झलक से जगमग हो रहे हैं –

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।

सौंह करै, भैंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।।5

– बिहारी सतसई

अतः बिहारी की अनुभूति की गम्भीरता, भाषा–शैली की सरसता और अलंकारों के अनेक प्रयोग से कवि की सूक्ष्म कलात्मक उपलब्धि देखने को मिलती है। इनके काव्य में अभिलाषा, शंका, लज्जा के विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ. शिव कुमार शर्मा – हिन्दी साहित्य – युग और प्रवृत्तियाँ – 414
2. डॉ. शिव कुमार शर्मा – हिन्दी साहित्य – युग और प्रवृत्तियाँ – 417
3. डॉ. शिव कुमार शर्मा – हिन्दी साहित्य – युग और प्रवृत्तियाँ – 65
4. डॉ. शिव कुमार शर्मा – हिन्दी साहित्य – युग और प्रवृत्तियाँ – 65
5. बिहारी – सतसई काव्य।